शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए है। (यूहन्ना 1:10–13)

और पुनः

''और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आयी है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे'' (यूहन्ना 3:19)

निवेदन

जिन ऋषियों ने 3000 वर्षो पूर्व गायत्री मंत्र लिखा था उनकी इच्छा ''सर्वोच्च पाप विनाशक ज्योति'' पाना थी, और उन्होंने सर्षष्टिकर्त्ता परमेश्वर से उनकी बुद्धि को उचित दिशा में निर्देशित करने का इच्छा निवेदन किया था। जैसी कि ऋषिओं की थी, मैंने पाप–विनाशक ज्योति को प्राप्त किया है। परमेश्वर ने मेरी बुद्धि को प्रभु यीशु की ओर निर्देशित किया और जब मैंने उसके विषय में सुना तब मैंने उस पर विश्वास किया और उससे पाप–विनाशक ज्योति को प्राप्त किया। अब परमेश्वर के साथ मेरी संगति है और वह मेरी बुद्धि का मार्गदर्शन उचित दिशा में करता है। आप भी इसी समय प्रभु यीशु को ग्रहण कर सकते हैं और अपने जीवन में पाप–विनाशक ज्योति और परमेश्वर के साथ संगति का अनुभव कर सकते हैं। क्या आप उस पाप–विनाशक ज्योति को पाना चाहते हैं जिसे एकमात्र प्रभु यीशु ही आपको दे सकता है ?

योजना

इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।

(1 कुरि. 15:3,4)

''इसलिए मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटायें जाएं जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आयें।'' (प्रेरितों के काम 3:19)

कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धम पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धम के लिये मुँह से अंगीकार किया जाता है। (रोमियों 10:9,10)

प्रार्थना

''हे सर्षष्टिकर्त्ता परमेश्वर, मैं अपने लिए आपकी इस इच्छा को जानता हूं कि आपके साथ संगति रखूं और ज्योति में चलूं। मैं स्वीकार करता हूं कि अपने पापों के कारण मैं अभी अन्धकार में जीवन व्यतीत कर रहा हूं। मैं इन गलतियों के लिए क्षमा मांगता हूं और अब मैं अन्धकार में चलने और अपने पूर्व के पापमय जीवन से विमुख होना चाहता हूं। मुझे मेरे पाप के लिए कष्पया क्षमा करें, और अन्धकार से अलग होकर ज्योति में चलने के प्रति, मेरी अगुवाई करें। मैं विश्वास करता हूं, कि मेरे पापों के लिए आपके पुत्र यीशु मसीह ने अपने प्राण दिये थे, वह मष्तको में से पुनःजीवित हुआ, और जीवित है। मैं यीशु को मेरी सच्ची ज्योति होने के लिए आमंत्रित करता हूँ कि वह मेरे हृदय में आये और मेरी बुद्धि को उचित दिशा में निर्देशित करें और मेरे जीवन का प्रभु हो। यीशु के नाम में मैं यह प्रार्थना करता हूं, आमीन ।''

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :

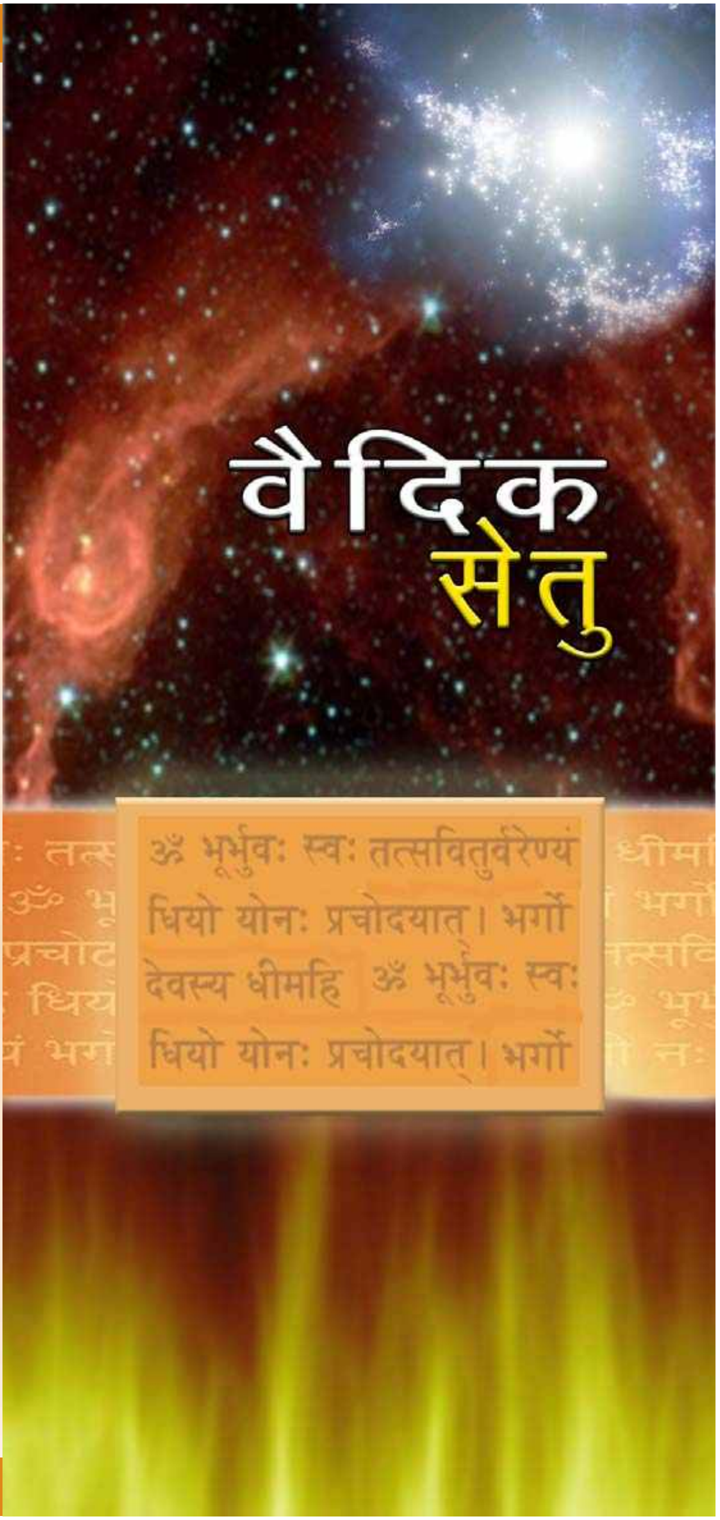

येशु मसीह तक पहुचने के लिए वैदिक सेतु

क्या आपने प्राचीन हिन्दू गायत्री मंत्र सुना है ? क्या आप जानते हैं कि यह क्या कहता है ?

''हे ईश्वर! आप जीवन प्रदान करने वाले हैं; कष्ट और दुख को हरने वाले, प्रसन्नता देने वाले, हे, विश्वमण्डल के सृष्टिकर्त्ता, क्या हम आपकी सर्वोच्च पाप विनाशक ज्योति को प्राप्त कर सकते हैं, आप हमारे ज्ञान का उचित दिशा में मार्गदर्शन करें।''

मुझे यह पंक्ति अत्यन्त रुचिकर लगती है, ''क्या हम आपकी सर्वोच्च पाप विनाशक ज्योति को प्राप्त कर सकते हैं। मैं वास्तव में उत्तेजित हूँ क्योंकि मुझे वह प्राप्त हो चुका है जिसके विषय में प्राचीनों ने गघांश में बताया था। मुझे ''पाप विनाशक ज्योति'' मिल गयी है। प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर तक पहुंचने के मार्ग को पाने की इच्छा रखता है, और हम सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर तक पहुंचने के मार्ग के इच्छुक हैं। क्या मैं आपके साथ उसकी सहभागिता कर सकता हूं जो मैंने इस सर्वोच्च पाप–विनाशक ज्योति के बारे में जाना है ?

समस्या

परमेश्वर का पवित्रशास्त्र बाइबिल उसे सुनिश्चित रुप से बताती है जिसे गायत्री मंत्र लिखने वाले ऋषि ने कहा था। बाइबिल कहती है, ''सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं'' (रोमियों 3:23)

गायत्री मंत्र के लेखक और बाइबिल के लेखकों ने यह पहिचाना था कि मनुष्य की सबसे बड़ी समस्या उनके पाप थे। हमें उस सर्वोच्च ज्योति की आवश्यकता है जो हम में उपस्थित पाप को नाश करेगी।

तैयारी

परमेश्वर यह जानता है कि हम अपने प्रयास से अपने पाप को नाश नहीं कर सकते हैं अतः उसने निर्णय लिया कि ''पाप–विनाशक ज्योति'' को हमारे लिए भेजे। पाप–विनाशक ज्योति के आने से पहिले परमेश्वर ने मार्ग तैयार करने के लिए एक गुरु को भेजा था। इस गुरु का नाम यूहन्ना था।

इस गुरु यूहन्ना के विषय में बाइबिल हमें बताती है : ''एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका नाम यूहन्ना था। वह गवाही देने आया था, कि ज्योति की गवाही दें, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लायें। वह स्वंय तो ज्योति न था, परन्तु वह उस ज्योति की गवाही देने के लिए आया था''। (यूहन्ना 1:6–8)

यूहन्ना ने किसके लिए मार्ग तैयार किया था?

गुरु यूहन्ना हमें यह उत्तर देता है। बाइबिल बताती है कि

'दूसरे दिन उसने यीशु को अपनी ओर आते हुए देखकर कहा, देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत के पाप उठा के ले जाता है। यह वही है, जिसके विषय में मैंने कहा था, कि एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझ से श्रेष्ठ है, क्योंकि मुझसे पहले था। और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिए मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इस्रायल पर प्रगट हो जाए''(यूहन्ना 1:29–31)।

यीशु के बारे में यूहन्ना ने यह भी बताया था, ''और मैंने देखा, और गवाही दी है, कि यही, परमेश्वर का पुत्र है''(यूहन्ना 1:34)।

उदघोषणा

यूहन्ना ने बताया था कि यीशु जगत के पाप हरने के लिए आया था।

परन्तु यीशु ने स्वंय के विषय में क्या उदघोषणा की थी ?

उसने कहा था, ''मैं जगत में ज्योति हो कर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करें, वह अन्धकार में न रहें'' (यूहन्ना 12:46)।

पाप अन्धकार है। हमें ज्योति की आवश्यकता है क्योंकि हम अन्धकार में, पाप में चल रहें हैं। यीशु ही वह ''पाप–विनाशक ज्योति है''।

पुनः यीशु ने कहा था : ''तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।'' (यूहन्ना 8:12)

अन्ततः उसने कहा : 'जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है, ज्योति पर विश्वास करो, कि तुम ज्योति की संतान होओ।'' (यूहन्ना 12'36)

यदि हम अन्धकार से निकलना चाहते है तो हमें अवश्य ही यीशु का अनुसरण करना है। यदि हम यीशु के पीछे चलते हैं तो वह हमारी पाप–विनाशक ज्योति होगा। वह हमें ''ज्योति की संतानें'' बनाएगा। यह ज्योति में एक नया जीवन होगा।

यीशु के विषय में यूहन्ना के कथनों और स्वंय के विषय में यीशु की साक्षी के अतिरिक्त बाइबिल इसको और अधिक सुनिश्चित करती है कि यीशु ''पाप–विनाशक ज्योति'' है।

यीशु–''पाप–विनाशक ज्योति'' के बाइबिल निम्नलिखित घोषणा करती है : आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उस ही के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी।'' (यूहन्ना 1:1–4)

''और ज्योति अन्धकार में चमकती है और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।'' (यूहन्ना 1:5)

वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ और जगत ने उसे नहीं पहचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते है वह न तो लोहू से न